अमर चित्र कथा

संख्या १४

10/-

सावित्री

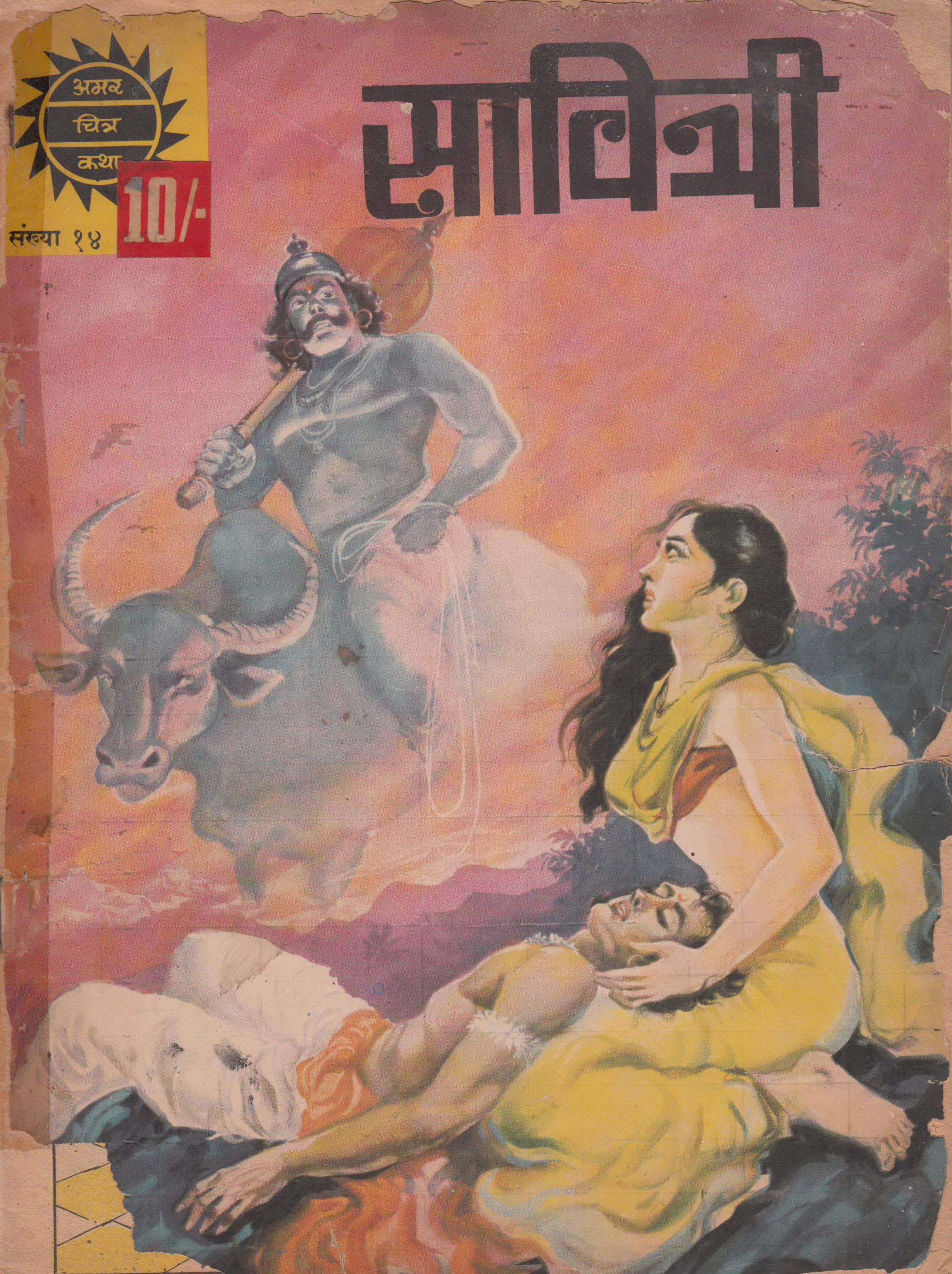

सावित्री और सत्यवान की कथा महाभारत में आती है। यह उन विभिन्न कथाओं में है जो मार्कण्डेय मुनि ने पाण्डवों के उनके बनवास की अवधि में सुनायी थी। पाण्डवों में सबसे बड़े भाई, युधिष्ठिर, पाँचों भाइयों की पत्नी, दौपदी के दुख से बहुत दुखी रहते थे क्योंकि द्रौपदी ने अपने पतियों के प्रेम-वश स्वयं ही अपने पर विपत्ति बुलायी थी। मार्कण्डे ने युधिष्ठर को समझाया कि चाहे कैसी और कितनी भी विपत्तियाँ उन पर पड़ें, पतिव्रता नारियाँ अन्त में सब पर विजय प्राप्त करती हैं और अपने प्रियजनों को विजयश्री दिलवाती हैं।

द्रौपदी की निष्ठा ने वैसे ही उन्हे आपत्तियों से मुक्ति दिलायी जैसे सती सावित्री ने अपने पति, सत्यवान के प्रति अपनी निष्ठा से अपने माता-पिता और सास-श्वसुर को सौभाग्य की प्राप्ति करायी और अपने लिए गया हुआ सुहाग प्राप्त किया। यह उसकी अडिग निष्ठा की ही शक्ति थी जिससे स्वंय यमराज भी प्रभावित हुए बिना नहीं रहे और उन्हें सत्यवान को फिर से जीवन देना पड़ा।

अमर चित्र कथा अर्थात उत्तम पुस्तकें
अब 360 से अधिक पुस्तकें उपलब्ध हैं।

सावित्री

प्राचीन काल में मद्र राज्य में अश्वपति राज्य करते थे। वे बड़े पुण्यात्मा थे।

उस दिनों की प्रथा के अनुसार उनके अनेक पत्नियाँ थी। उनके महल में सदा चहल-पहल रहती थी।

किन्तु अश्वपति दुखी थे। उनके संतान न थी।

राजा गाजे-बाजे के साथ सविता के मन्दिर की ओर चले...

तभी मन्दिर में चारों ओर प्रकाश छा गया और सवितृदेव राजा के सामने प्रकट हुए...

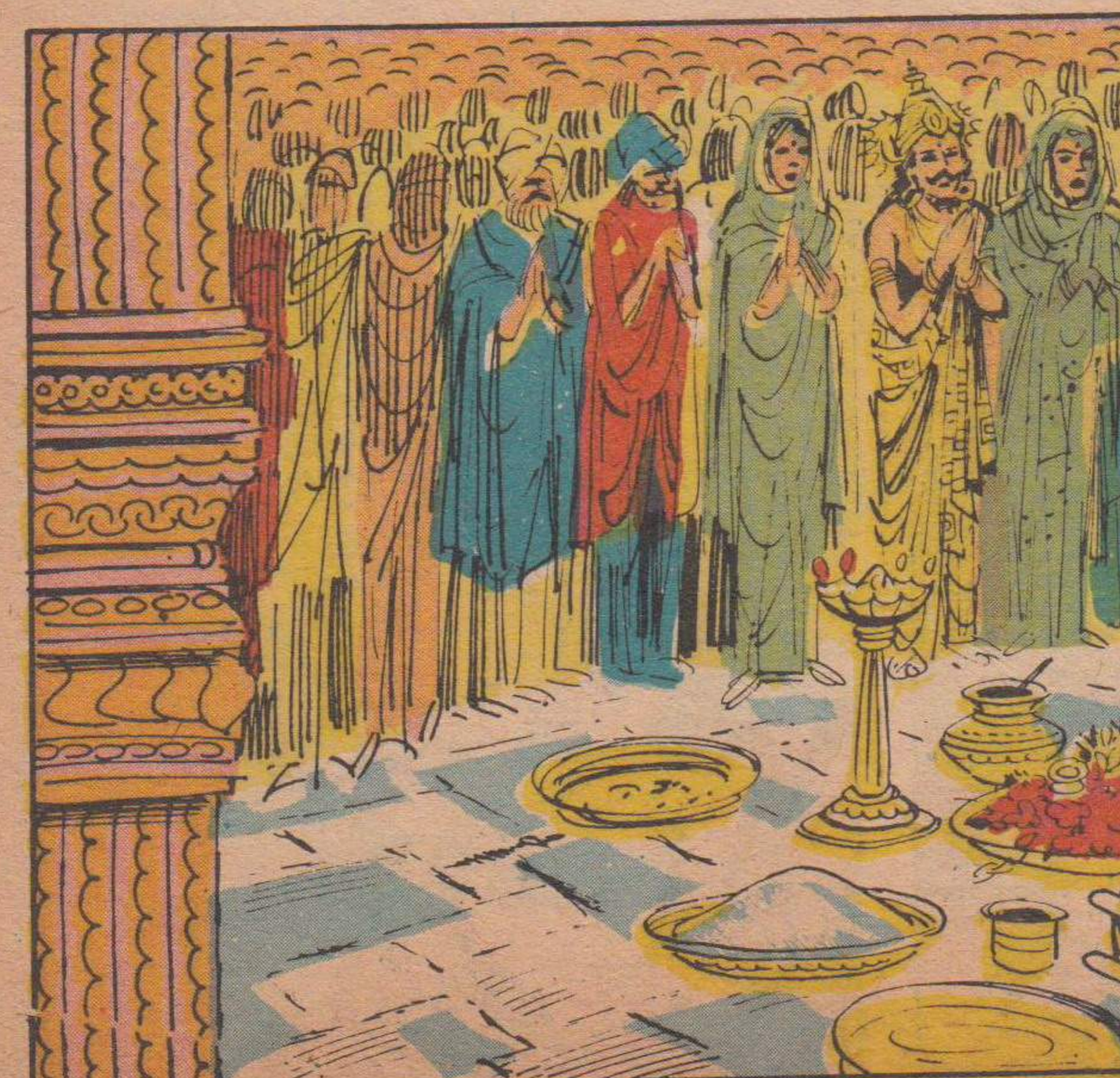

कुछ महीने बाद प्रसव का दिन आया। शुभ समाचार की प्रतीक्षा में महल के बाहर भारी भीड़ जमा हो गयी।

राज्य भर में खुशियाँ मनायी गयीं। राजा ने बहुत दान-पुण्य किया।

महल में कन्या की किलकारियाँ गूँजने लगीं।

पुत्री का क्या! पाल-पोस कर बड़ा करो, फिर एक दिन पराये घर विदा कर दो!

कन्याएँ तो फूल जैसी होती हैं - जहाँ जाती है सुगंध फैलाती हैं!

बड़ी हो कर सावित्री संगीत और दर्शन सीखने लगी...

... और खगोल शास्त्र...

भाग्य क्या ग्रहों के अधीन है?

... और फिर उसने पीड़ा भी जानी... विछोह की...

पिता जी, मेरी सहेलियाँ कहती हैं कि लड़कियों को विवाह कर के दूर जाना पड़ता है! पर, मैं कहीं नहीं जाऊँगी!

हा-हा! अभी वह समय नहीं आया, बेटी!

कुछ समय बाद... सुंदर युवती सावित्री अपने पिता के पास आयी।

पहाड़ी पर बने हुए शांत मन्दिर में पहुँच कर सावित्री का चित्त बहुत प्रसन्न हुआ।

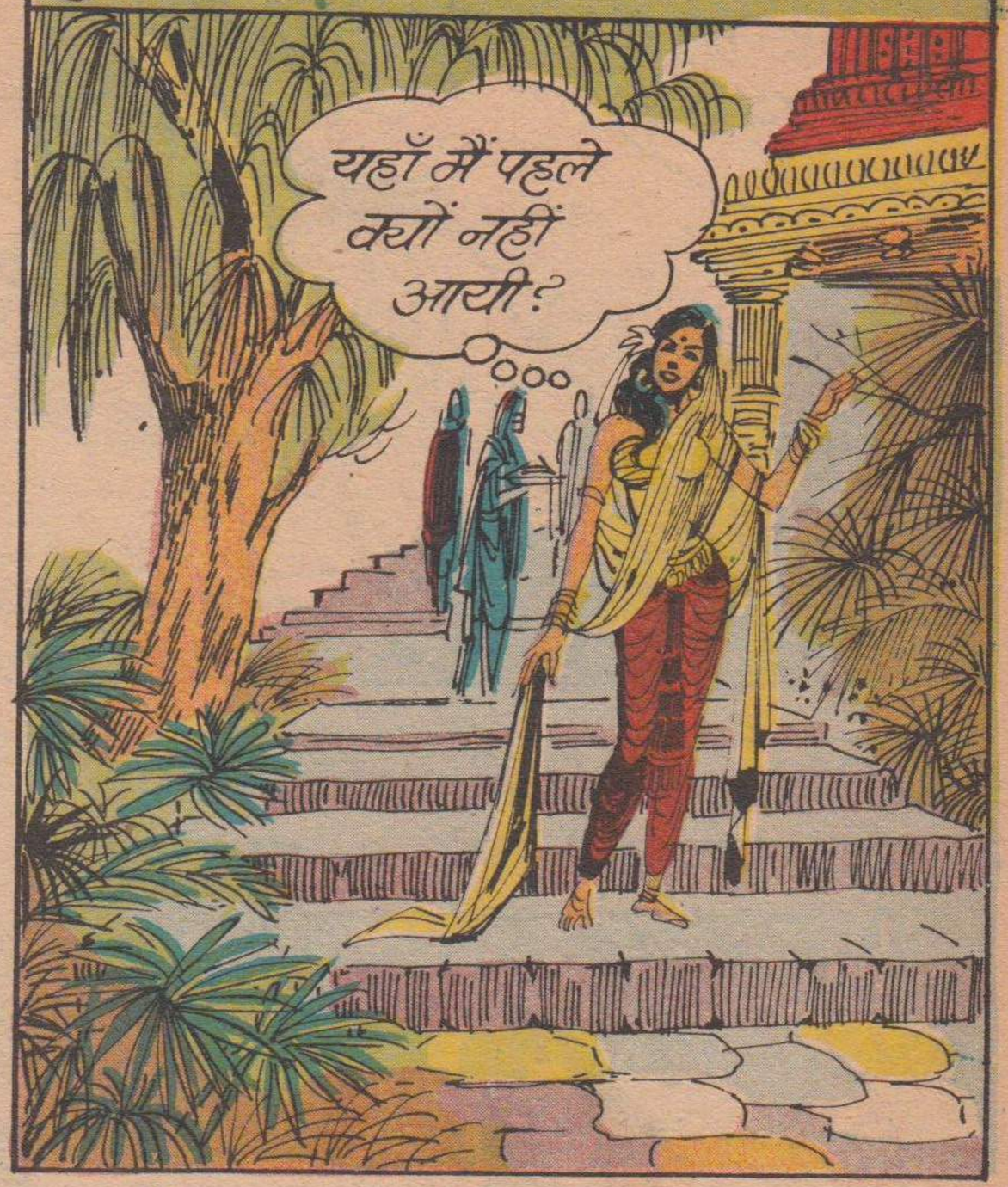

लौटते समय सावित्री को महल के द्वार के पास घोड़े पर सवार, कई युवा अधिकारी मिले।

राजकुमारी न होती तो भी इस सौंदर्य के आगे शीश झुकाना पड़ता!

सावित्री ने यह बात सुन ली और उसका मुँह लज्जा से लाल हो गया।
कितने सुन्दर हैं ये अश्व!
चलिये, राजकुमारी जी, देर हो रही है।

राजा ने यह दृश्य महल की खिड़की से देखा।

पिता जी! मैं मन्दिर से आपके लिए फूल लायी हूँ!
बेटी, तुम्हारा चेहरा लाल क्यों है?

पुत्री को जाते हुए देख कर राजा को भान हुआ कि वह कितनी सुन्दर हो गयी है।
धूप से हो गया है, पिता जी!
अब इसका विवाह करना होगा!

सावित्री की सुन्दरता और विद्वत्ता की चर्चा अन्य राज-दरबारों में पहुँच चुकी थी।

मद्र-नरेश की पुत्री विवाह योग्य है!

पर मेरे पुत्र उसके योग्य कहाँ हैं?

एक और राज दरबार में...

नहीं, मेरा पुत्र सावित्री के योग्य नहीं। ज्ञानवान कन्या को ज्ञानी वर ही चाहिये।

कहीं सावित्री के योग्य वर नहीं मिला।

राजकुमार अब बड़े हुए... मद्र-नरेश से उनके विवाह की बात चलायी जाये?

नहीं- सावित्री की गरिमा तक हम कैसे पहुँच पायेंगे?

किसी ने सावित्री का वर बनने का साहस न हुआ।

सावित्री के साथ विवाह के लिए कोई प्रस्ताव आया?

नहीं, महाराज!

राज-विदूषक ने एक सुझाव दिया...

सावित्री स्वयं ही अपना वर चुनें...

मज़ाक कर रहे हो क्या ?

परन्तु सुझाव राजा को पसन्द आया। उन्होंने सावित्री को बुलवाया। सावित्री राज़ी न थी।

मुझे विवाह नहीं करना। मैं आपके पास ही रहूँगी।

जो पिता अपनी पुत्री का विवाह नहीं करता वह पाप का भागी होता है।

तो फिर जैसी आपकी इच्छा, पिताजी!

यह निश्चय हुआ कि सावित्री विभिन्न राज्यों की यात्रा करेगी और मन्त्री उसके साथ रहेंगे।

सावित्री बहुत प्रसन्न थी कि मार्ग में उसे अनेक तीर्थों का दर्शन-लाभ होगा।

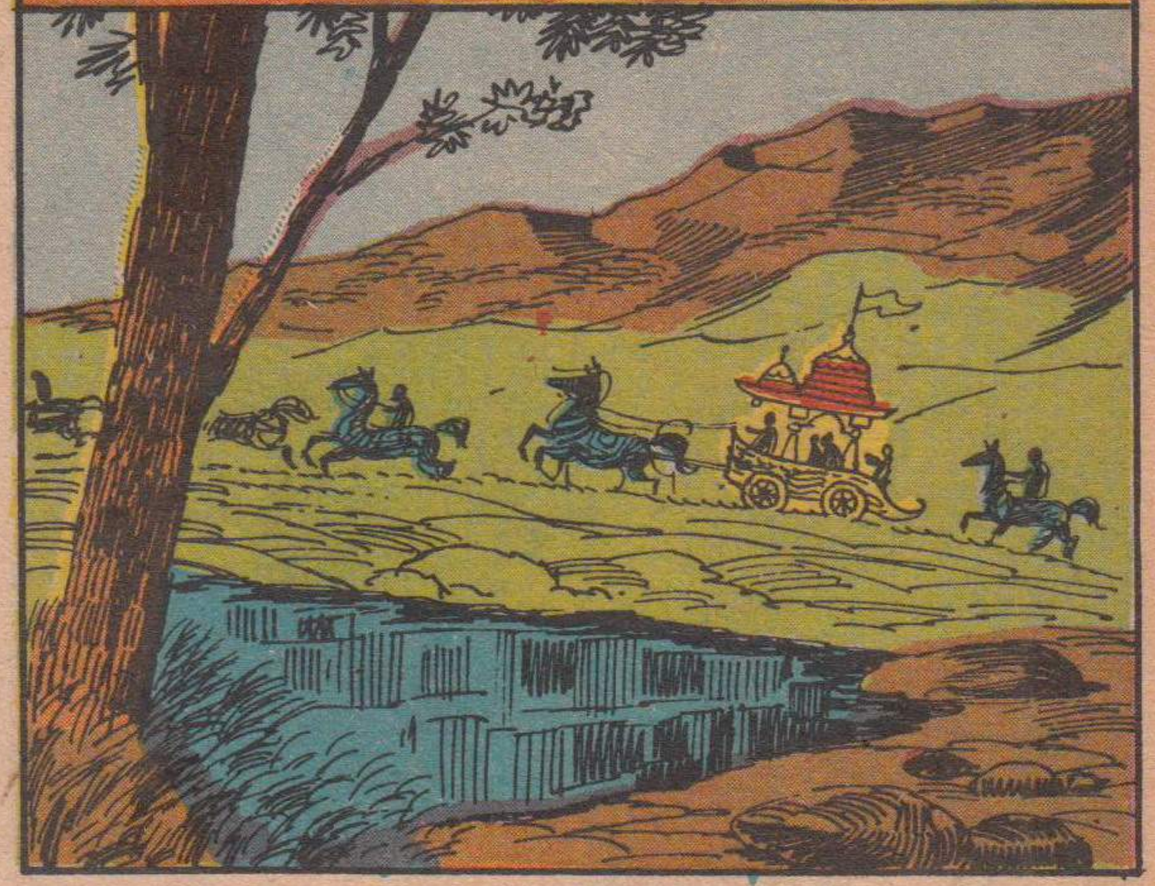

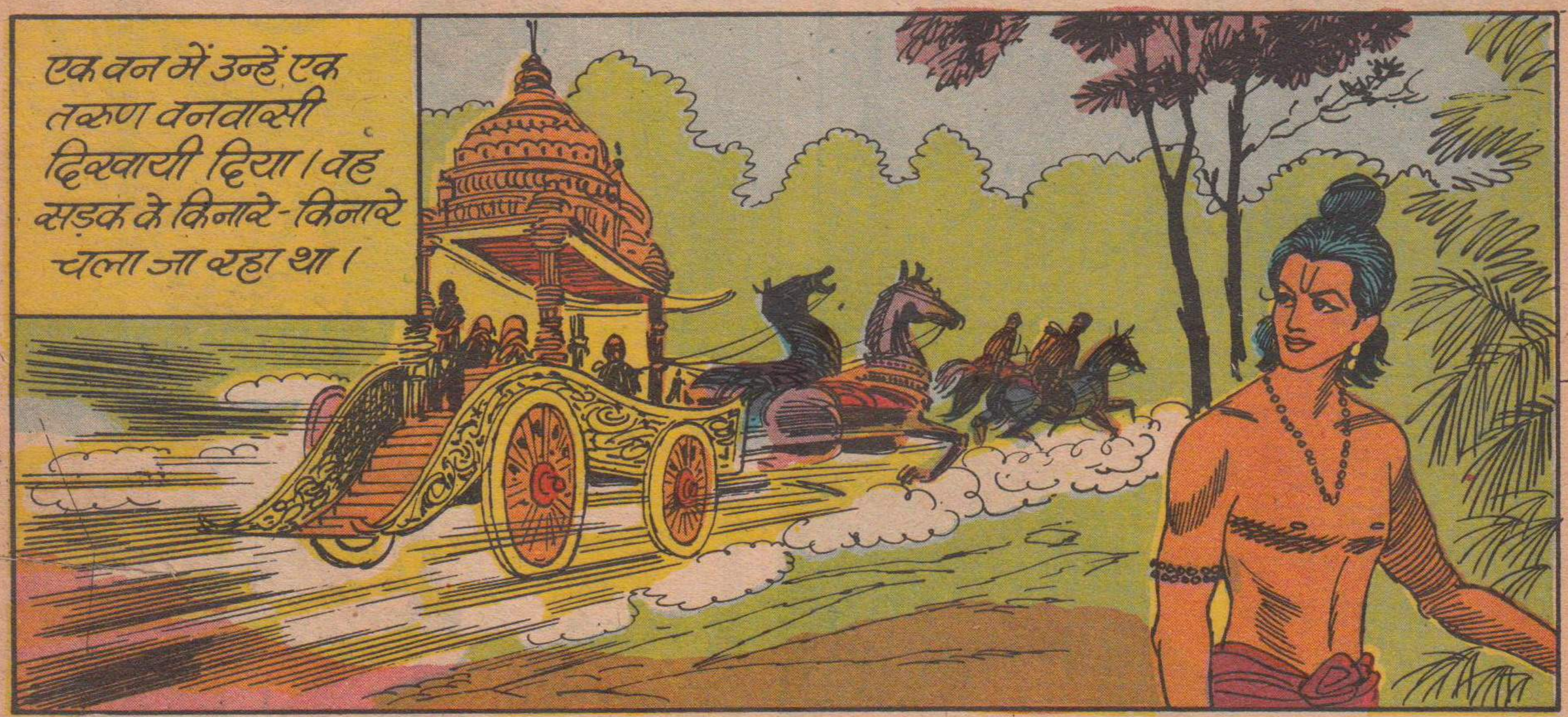

वाराणसी में...

मेरे पुत्र वीर हैं, साहसी हैं! तुम किसी को भी चुन लो, बेटी!

परन्तु सावित्री के मन में तो कोई और बस चुका था।

चुनाव कर लिया तुमने?

नहीं! चलिये, वापस लौट चलें।

बताओ तो - कैसा पति चाहिये तुम्हें?

इन्हें कैसे बताऊँ? मुझे तो उनका नाम भी नहीं मालूम!

रथ फिर जंगल से जा रहा था... सावित्री को विश्वास था कि फिर उस तरुण वनवासी से भेंट होगी।

प्यास लगी है! यहाँ कहीं पानी मिल जायेगा?

सामने एक कुटिया है तो। जा कर देखता हूँ!

किसी तरुण की स्नेहपूर्ण वाणी सुन कर वह चौंक पड़ी...

राजकुमारी को जल चाहिये?

वे ही हैं!... परन्तु वनवासी हैं!... मैं कैसे...?

सावित्री ने सोचा, बिना सच्चाई का पता लगाये वह नहीं जा सकेगी।

यहीं रुकिये! उनके बारे में पूरी जानकारी प्राप्त कीजिये।

अच्छी बात— मैं जाता हूँ।

मंत्री कुछ देर में लौट आये।

वह वनवासी नहीं है! अपने राज्य से निकाले गये किसी राजा का पुत्र है... सत्यवान् नाम है। वह तुम्हें पसन्द है?

जी हाँ!

सावित्री अपने पिता के महल में वापस आयी तो... राजा स्वयं उसके पास आये।

लौट आयीं, बेटी... पसन्द आया कोई वर ?

हाँ, पिताजी!

परन्तु संकोच के कारण वह आगे कुछ न कह सकी।

लजाती क्यों हो, बेटी ?

राजकुमारी ने सत्यवान् को पसन्द किया है। वे वनवासी हैं।

वनवासी ?

तभी एक दूत ने बातचीत में विघ्न डाल दिया...

महाराज, नारद मुनि पधारे हैं !

अच्छा ! मैं उनका स्वागत करने जाता हूँ !

क्या बात हो रही थी ?
मेरी पुत्री ने एक निर्धन वर चुना है। उसका नाम है सत्यवान् !

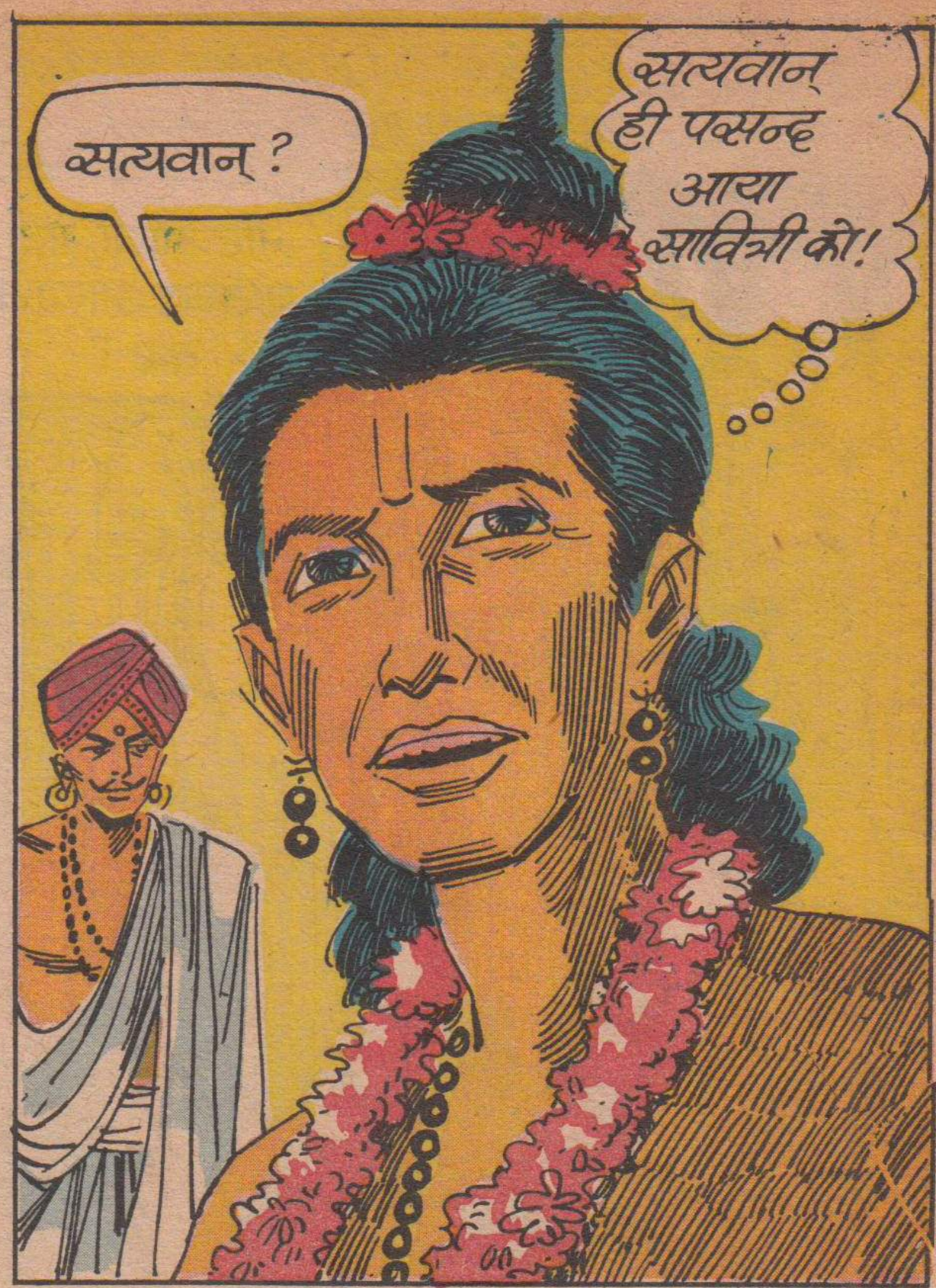
सत्यवान् ?
सत्यवान् ही पसन्द आया सावित्री को!

राजा ने नारद मुनि के नेत्रों की व्याकुलता भाँप ली।
आप उसे जानते हैं ?
हाँ! उसके पिता द्युमत्सेन साल्व के राजा थे! अंधे हो जाने पर राजपाट उनके हाथ से चला गया!

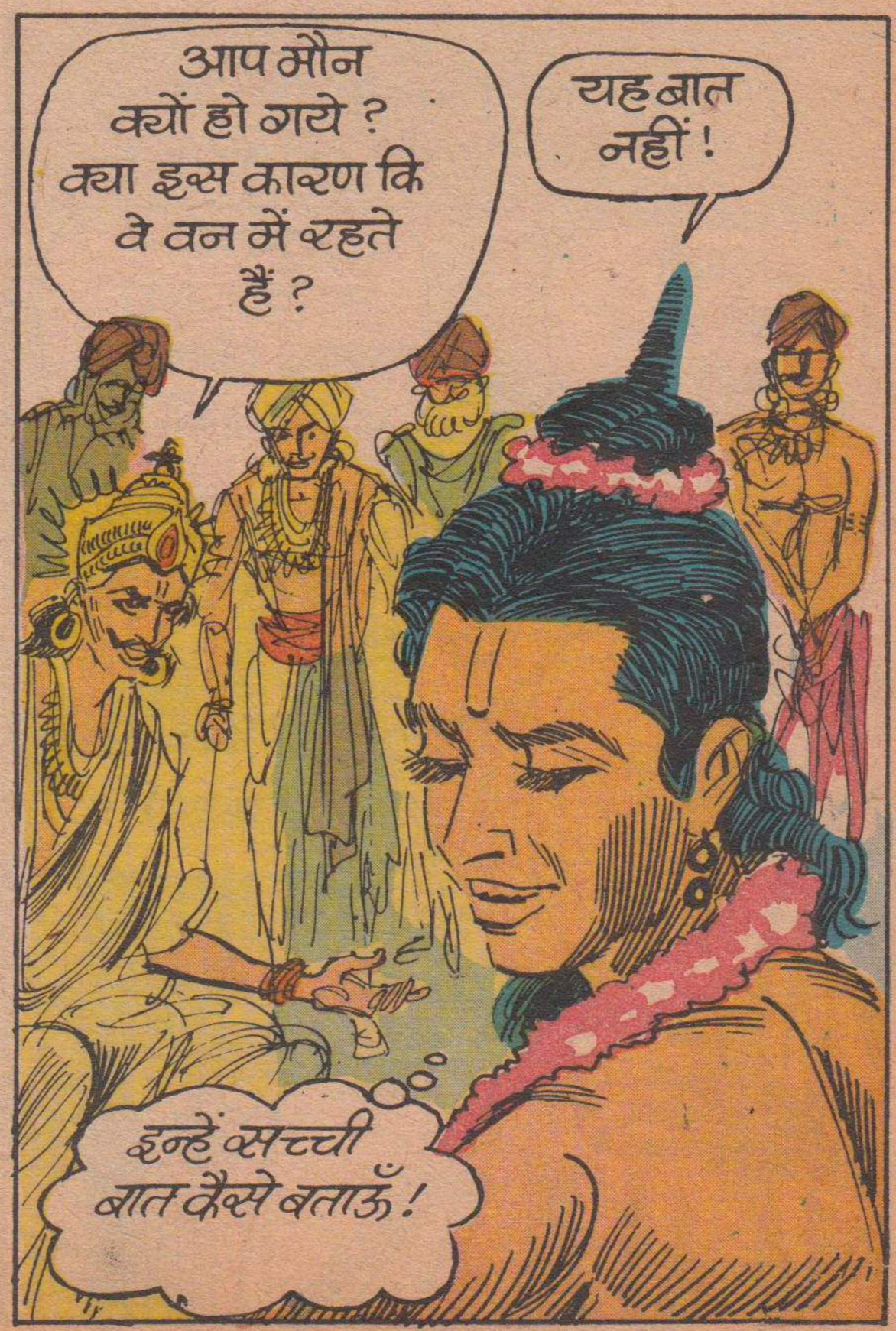
आप मौन क्यों हो गये ? क्या इस कारण कि वे वन में रहते हैं ?
यह बात नहीं !
इन्हें सच्ची बात कैसे बताऊँ!

अश्वपति बार-बार पूछने लगे...

क्या वह कुलीन नहीं? वीर नहीं?

कुलीनता और वीरता में वह अद्वितीय है।

अन्त में नारद मुनि को सच्चाई बतानी ही पड़ी।

आज से ठीक एक वर्ष बाद सत्यवान् की मृत्यु हो जायेगी!

अर्थात्, एक वर्ष बाद मेरी पुत्री विधवा हो जायेगी!

हाँ... यदि उसने सत्यवान् से विवाह किया तो!

अश्वपति सोच में पड़ गये। उन्होंने सावित्री को बुलाया।

बेटी, तुम्हारा विवाह सत्यवान् से नहीं होगा! उसकी मृत्यु निकट है!

परन्तु पिता जी, उन्हें मैं अपना पति मान चुकी हूँ! मैं किसी और से विवाह कैसे कर सकती हूँ?

अन्त में अश्वपति को सावित्री की बात माननी पड़ी।

तुम्हारी पुत्री ने बड़ा साहसिक निश्चय किया है। उसे मान लो।

अच्छा- मान लेता हूँ।

कुछ दिन बाद, महल के लोग वधू को ले कर वन में आये... वनवासियों ने सबका स्वागत किया।

आरंभ में, द्युमत्सेन ने काफ़ी असमंजस दिखाया...

सखियों ने सावित्री का श्रृंगार किया...

मंत्रोच्चार के साथ विवाह सम्पन्न हुआ... अश्वपति ने पुत्री का हाथ सत्यवान् के हाथ में दे दिया।

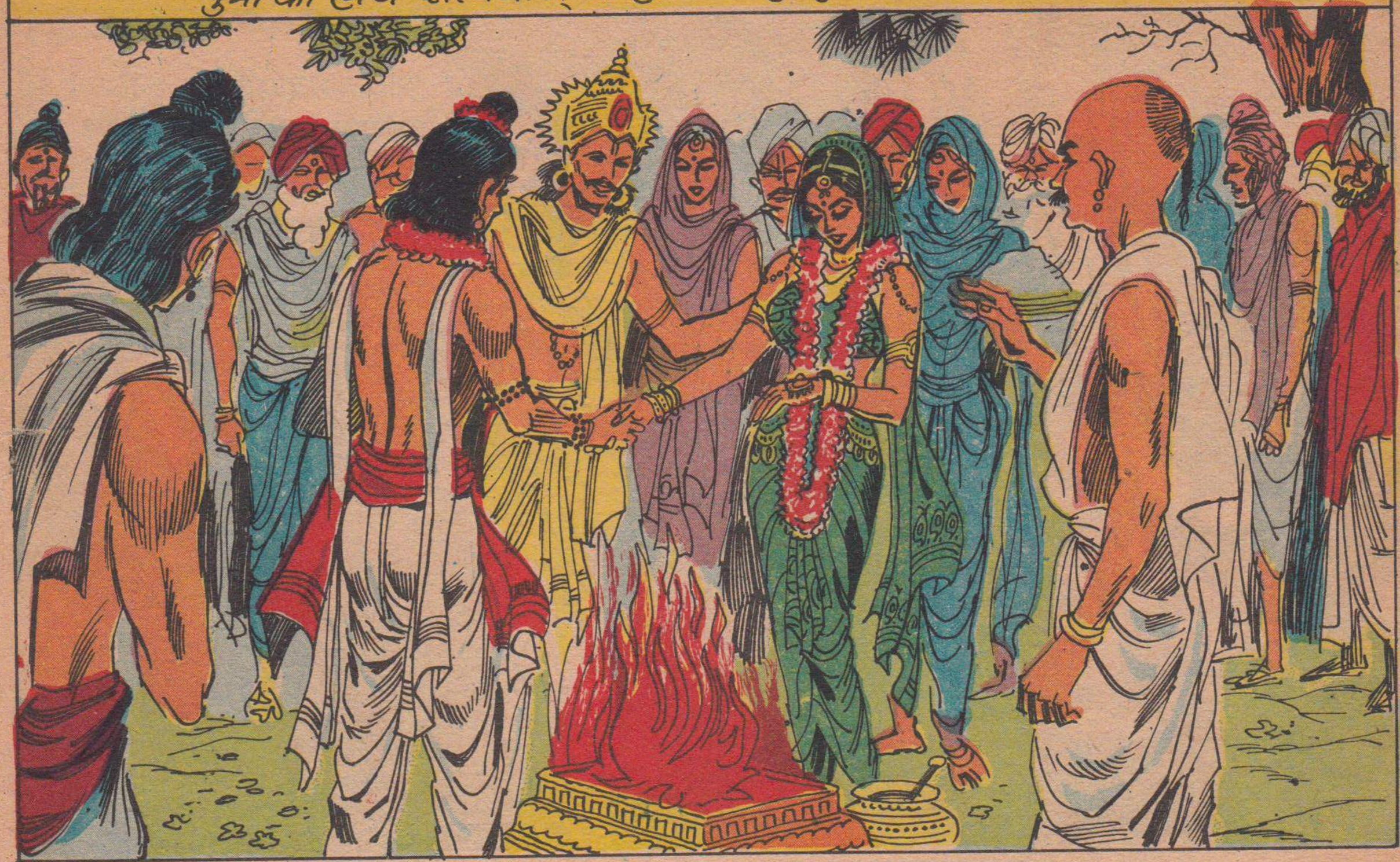

वर और वधू ने अग्नि के सात फेरे किये... और विवाह-बन्धन में बँध गये।

फिर विदा की घड़ी आयी...

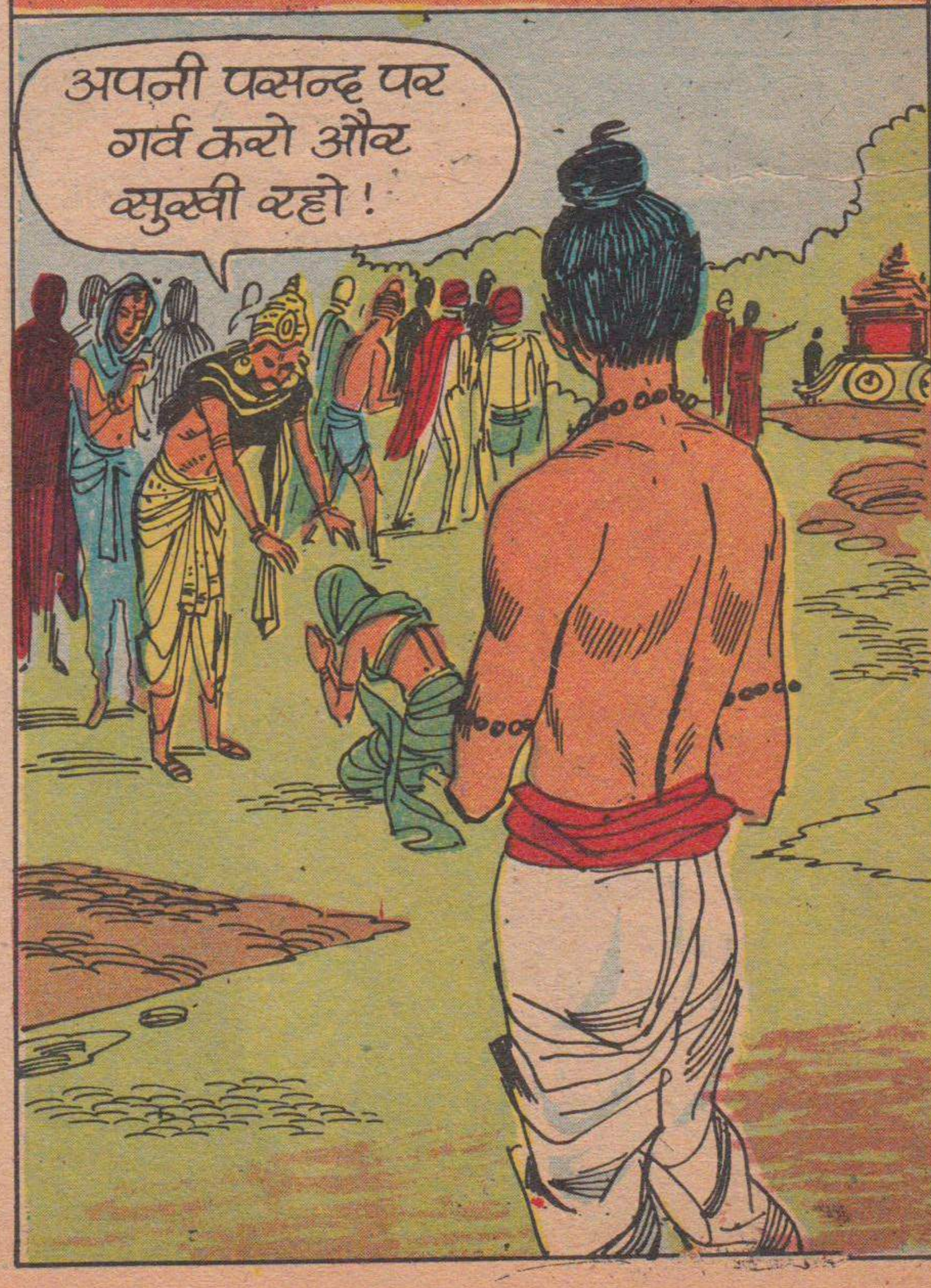

माता-पिता के जाते ही सावित्री ने राजसी वस्त्र और आभूषण उतार कर वन-वासियों जैसे कपड़े पहन लिये।

तुमने ये वस्त्र क्यों पहने?

आप वनवासी हैं... और मैं आपकी पत्नी! और कैसे वस्त्र पहनूँ मैं?

सत्यवान् ने एक सुन्दर अँगूठी निकाली जो उसने इसी अवसर के लिए रख छोड़ी थी।

यह तुम्हें पहननी ही होगी इसकी मणि देखो! इतनी चमकदार है कि अपना मुँह इसमें देख सकती हो!

दर्पण की तरह! किन्तु मुझे दर्पण की क्या आवश्यकता?

सावित्री अपने सास-ससुर का बहुत ध्यान रखती थी; पुत्री की तरह उनकी सेवा करती थी।

देर हो गयी बेटी- जाओ, सो जाओ!

और कोई सेवा हो तो बताइये!

जैसे-जैसे दिन बीतने लगे, सावित्री के मन की व्यथा बढ़ने लगी।

आज कौन सी तिथि है, माता जी?

शुक्ल पक्ष की अष्टमी है!

केवल साठ दिन रह गये!

साल बीतता गया... दुर्भाग्यपूर्ण घड़ी में जब तीन दिन रह गये तब सावित्री ने उपवास किया...

बेटी, यह व्रत बहुत कठिन है!

चिन्ता न करें पिता जी, मैं कर सकूँगी।

अन्तिम रात उसे नींद नहीं आयी... एक ही विचार उसे सालता रहा।

कल मेरे पति की मृत्यु होने वाली है! मैं क्या करूँ?

सुबह हुई...

आज मुझे अपने साथ ले चलिये।

क्यों, सावित्री?

आज इच्छा है जाने की!

अच्छी बात है, - चलो!

उसके मुख पर मुस्कान थी, परन्तु हृदय में व्यथा। सत्यवान् प्रसन्न था।

तुम्हें पायल पहननी होगी! पायल की रुनझुन बड़ी प्यारी लगती है!

वन में सावित्री का हृदय भय से भारी था।

संसार कितना सुन्दर है... पर जीवन इतना क्षणभंगुर है कि उसकी हर वस्तु का आनन्द नहीं लिया जा सकता!

सावित्री, ऐसे दुखदायक विचार मन में क्यों लाती हो?

सावित्री के हृदय की धड़कन पल-पल बढ़ती जा रही थी। पत्ते-पत्ते में उसे मौत छिपी दिखायी देती थी।

अचानक सत्यवान् का शरीर पसीने से नहा गया... उसके अंग-अंग में तीव्र पीड़ा होने लगी।

सावित्री भाग कर पति के पास आयी।

शीघ्र ही सत्यवान का शरीर जड़ हो गया।

वन उसके लिए अन्धकारमय हो गया... हवा भी ठहर गयी... सावित्री ने सर उठाया... सामने लाल वस्त्रों में लिपटी एक काली आकृति दिखायी दी।

सावित्री दुखी थी परन्तु भयभीत नहीं हुई। वह उससे बात करने लगी—

आप कौन हैं?

तुमने पहचाना नहीं? मैं यम हूँ - मृत्यु का देवता। सत्यवान की आत्मा को लेने आया हूँ!

पर यह काम तो आपके दूत करते हैं न। आपने स्वयं क्यों कष्ट किया?

सत्यवान् साधारण पुरुष नहीं था- धर्मात्मा था। इसलिए मैं स्वयं आया!

यमराज ने रस्सी निकाली और सत्यवान् की आत्मा को उससे बाँध कर जाने लगे।

सावित्री ने सत्यवान् के मुख पर मृत्यु की शान्ति देखी।

प्रिय पति की मृत्यु के बाद अब मेरे लिए जीवन में कुछ शेष नहीं रहा है। मैं यमराज के पीछे जाऊँगी!

कुछ अंतर छोड़कर सावित्री यमराज का पीछा करने लगी। लंबी घास में उसकी पायल की रुनझुन दब गयी।

शीघ्र ही दोनों एक सोते के पास पहुँचे। यहाँ भी पायल की रुनझुन पानी की आवाज़ में डूब गयी।

पर धरती पर पैर पड़ते ही पायल का स्वर यमराज को सुनायी दिया।

वे ठहर कर इस स्वर को सुनने लगे।

तुम मेरे पीछे क्यों आयी हो ?
जहाँ मेरे पति जायेंगे, वहाँ मैं भी जाऊँगी।

तुम्हारे पति मर चुके हैं! तुम लौट जाओ!
उनका प्राणदान लिये बिना मैं नहीं जाऊँगी।

यह असम्भव है! पर बताओ मैं प्राणदान क्यों करूँ ?
यमराज के स्वर में हल्का सा व्यंग था।

किसी के साथ सात कदम चलो, तो वह मित्र हो जाता है। मैं तो बहुत दूर आपके साथ आयी हूँ!

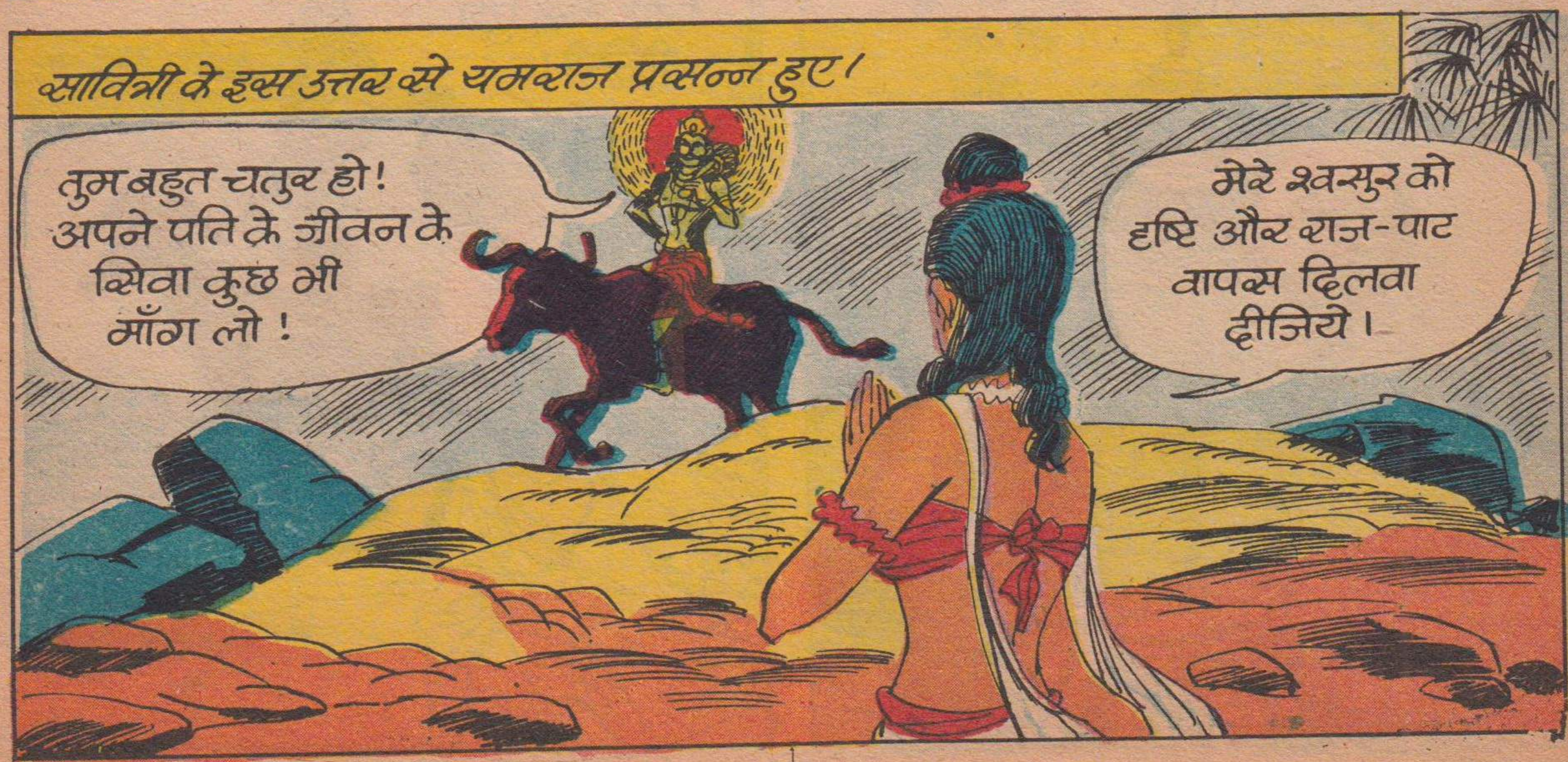
सावित्री के इस उत्तर से यमराज प्रसन्न हुए।
तुम बहुत चतुर हो! अपने पति के जीवन के सिवा कुछ भी माँग लो!
मेरे श्वसुर को दृष्टि और राज-पाट वापस दिलवा दीजिये।

यमराज को आश्चर्य हुआ कि सावित्री ने अपने लिए कुछ नहीं माँगा।

अब लौट जाओ! तुम और आगे नहीं आ सकतीं!

ये मेरे जीवनसाथी हैं – इस लोक में भी, परलोक में भी। इन्हें कैसे छोड़ूँ?

तुम्हारे पति वन में पड़े हैं। जा कर उनका अंतिम संस्कार करो।

आप क्यों मेरी परीक्षा ले रहे हैं? आत्मा चली गयी तो देह किस काम की?

ये शब्द पवित्र संगीत की तरह वातावरण में गूँज गये। यमराज के पाँव भी ठिठक गये।

तुम्हारे पति के प्राण तो चले गये! पर मैं तुम्हारी भक्ति से प्रसन्न हूँ! दो वर और माँग लो!

सावित्री जानती थी कि सीधे प्राणों का दान माँगना तो व्यर्थ होगा, अतः उसने एक उपाय किया!

मेरे पिता पुत्रविहीन हैं। उनका वंश चलाने के लिए उन्हें पुत्र दीजिये।

उन्हें पुत्र की प्राप्ति होगी! और माँगो!

मुझे वर दीजिये कि मेरे सौ पुत्र हों।

तुम्हारी इच्छा पूर्ण होगी।
धन्यवाद, महाराज!

यमराज आगे चल पड़े। कुछ कदम चल कर उन्होंने मुड़ कर सावित्री को देखा।
अब क्या बात है?
मेरे पति तो मर गये... मेरे पुत्र कैसे होंगे?

तुम्हारी भक्ति अनुपम है! मैं तुम्हारे पति के प्राण लौटाता हूँ!
अपने वचन में स्वयं फँसा गया।

सावित्री प्रसन्नता के मारे भागते हुए वहाँ आयी जहाँ सत्यवान् का शव पड़ा था।

सत्यवान् वैसा ही लेटा था जैसा वह छोड़ गयी थी। उसे सन्देह हुआ।

सावित्री जानती थी कि साँस स्वच्छ मणि पर भाप की तरह जम जाती है। उसने अंगूठी सत्यवान् की नाक के पास लगायी।

शीघ्र ही सत्यवान् ने आँखें खोल दीं।

पति-पत्नी घर की ओर चले। सावित्री के हर्ष की सीमा न थी।

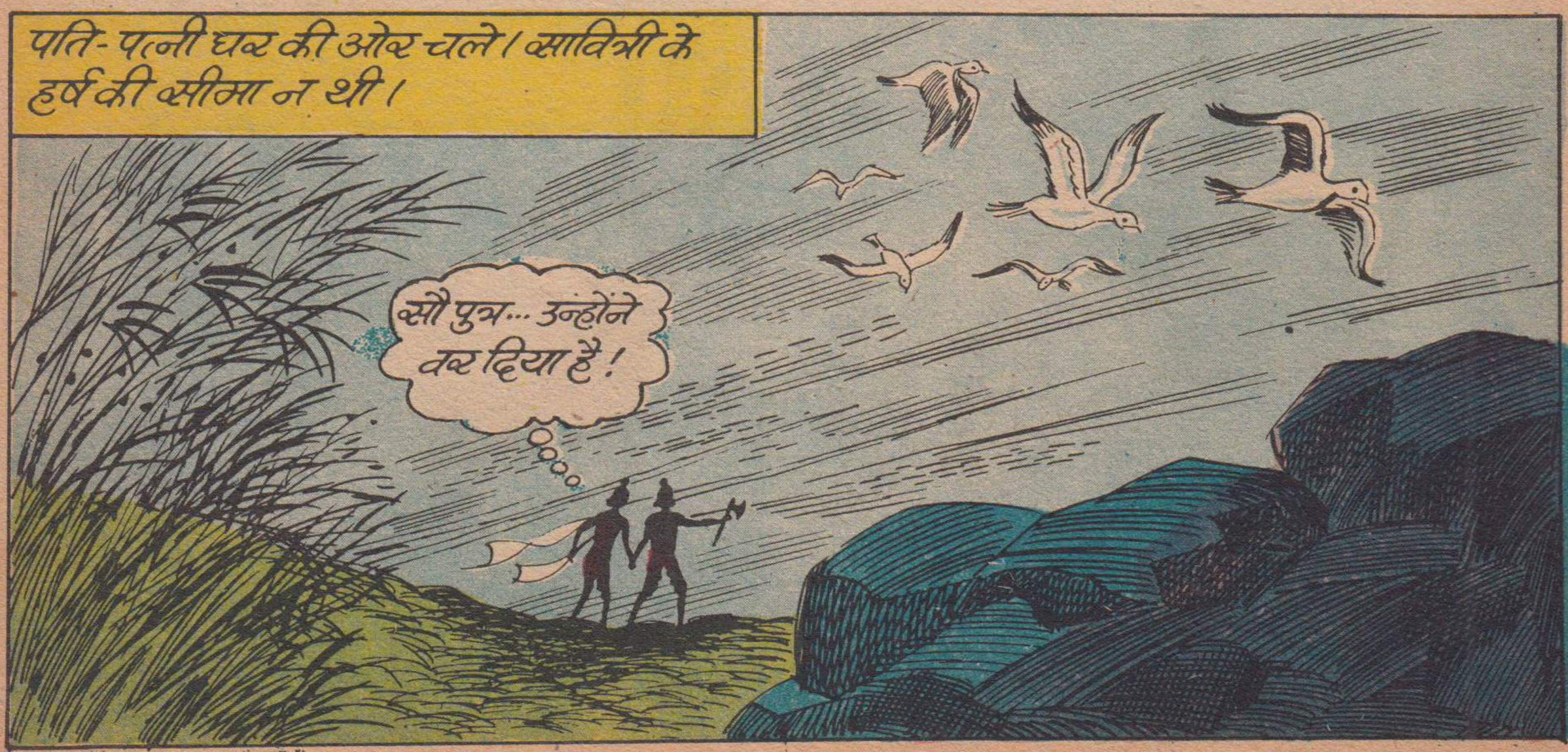

उधर... द्युमत्सेन की दृष्टि लौट आयी थी।
आप मुझे इस तरह क्यों देख रहे हैं?
क्योंकि मैं तुम्हें देख सकता हूँ! चमत्कार है न!

परन्तु सत्यवान् कहाँ है? सावित्री कहाँ है? उन्हें अब तक लौट आना चाहिए था!

द्युमत्सेन चिन्तित हो कर कुटिया से निकले कि उन्हें दूर धूल का बादल उठता दिखायी दिया।
आँधी आ रही है क्या?
नहीं - मुझे तो घुड़सवार लगते हैं!

घुड़सवार वहाँ आ पहुँचे। द्युमत्सेन ने उन्हें पहचान लिया। वे उन्हीं के राज्य के थे।
महाराज, आपके शत्रु हार गये! हम आपको लेने आये हैं!
चमत्कार!

पर मेरे पुत्र और पुत्र-वधू की खोज तो करो।
जंगल में चारों ओर जा कर देखो।

पर उन्हें बहुत दूर नहीं जाना पड़ा।
सत्यवान्! सावित्री! लौट आये तुम!
पिता जी, क्या बात है?

बेटी, तुम एक निर्धन के घर आयी थीं... परन्तु अब राज करोगी! तुम्हारे बेटे राजकुमार कहलायेंगे!
यमराज की कृपा है।

सब लोग अपने राज्य को लौट चले। अत्यन्त हर्षपूर्ण थी यह यात्रा।

October 1, 1980
Regd. No: MH-BY-South-732
Registered with the Registrar of Newspapers for India
Registration No: R.N. 31756/7